ISSN:2583-8849



घनश्याम सिंह किनियां
सीकर, राजस्थान

गोकुल वाला गाँव रे...

कहाँ गया यमुना का वो तट,
वंशी वट की छाँव रे।
कहाँ गये वो नंद यशोदा,
गोकुल वाला गाँव रे..२।।

कहाँ गये मुरलीधर माधव,
वन में गाय चराते थे।
वृंदावन की कुंज गलिन में,
मिलकर रास रचाते थे।।
ता ता थैया गाते भैया,
और थिरकते पाँव रे।
कहाँ गये वो नंद यशोदा,
गोकुल वाला गाँव रे ।।१।।

ना माने नँदलाल हमेशा,
माखनचोरी करते थे।
गिरधारी गोपाल गोविंदा,
पर मैया से डरते थे।।
कहाँ गये वो कृष्ण कन्हैया,
कहाँ गये बलराम रे।
कहाँ गये वो नंद यशोदा,
गोकुल वाला गाँव रे ।।

कहाँ गई वृषभानु दुलारी,
बरसानै की जाई वो।
कहाँ गई वो गोप कुमारी,
मोहन के मन भाई जो।।
कहाँ गई ब्रजराज किशोरी,
राधा जिसका नाँव रे।
कहाँ गये वो नंद यशोदा,
गोकुल वाला गाँव रे ।।

धरती बदली अंबर बदला,
बदली दुनिया सारी है।
रिश्ते बदले नाते बदले,
बदले सब संसारी है।।
सबकुछ बदल गया बनवारी,
तूँ ना बदला साँवरे।
कहाँ गये वो नंद यशोदा,
गोकुल वाला गाँव रे ।।

दीनानाथ दया के सागर,
भज मनवा गिरधारी तूँ।
रट रसना केशव करुणाकर,
राधा रमण बिहारी तूँ।।
तुम्हें मनावे भजन सुनावे,
गुण गाये घनश्याम रे ।
कहाँ गये वो नंद यशोदा,
गोकुल वाला गाँव रे ।।